पु

स्वर्गीय सम्पादकाचार्य

श्री पं० रुद्रदत्तजी शर्मा

2898

तिथि ....

पुस्तकालय ....

मुद्रक व प्रकाशक—

गोविन्दराम हासानन्द

वैदिक प्रेस

२० कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

पांचवींवार १९०० } १९३५ { मूल्य चार आना

ओ३म्

पुराण परीक्षा

लेखक—

स्वर्गीय सम्पादकाचार्य्य—

श्री पं० रुद्रदत्तजी शर्म्मा

मुद्रक व प्रकाशक—

गोविन्दराम हासानन्द

वैदिक प्रेस

२०, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

पांचवीं वार १९३५ मूल्य
११०० चार आना

३५५६
स्वा॰ पु॰ २२
१०-७५
२४५०
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

ओ३म्

पुराण परीक्षा

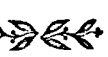

उस सर्व शक्तिमान् परमात्माकी भी क्या ही अपार महिमा है कि जिसने जीवोंको कर्मानुसार विविध प्रकारके स्वभाव और बुद्धि वैचक्षण्य प्रदान करके अपनी विचित्र रचनाका अपूर्व परिचय दिया है। उनमें भी मनुष्य योनिमें प्राप्त जीव अत्यन्त ही विचित्र भाव और कार्य्योंसे परिपूर्ण जान पड़ते हैं एक मनुष्य जिस वस्तुको बनाके प्रसन्न होता है दूसरा उस ही वस्तुको बिगाड़कर आनन्द मानता है, प्रत्यक्ष देख लीजिये कि माली वृक्षको लगाकर और बढ़ई वृक्षको काटके प्रमोद मानता है। जुलाहा कपड़ेको बनाके और दर्जी कपड़ेको काटके हर्षित होता हैं, परन्तु विचित्रता यह है कि समयानुसार किसीका भी कार्य्य निन्दित वा हानिकारक नहीं समझा जा सकता है परन्तु असमयमें अथवा अनाड़ी कारीगरका कार्य निन्दित अरोचक और हानिकारक भी प्रायः जचा करता है। जगत्में वह कारीगर भी हानिकारक समझा जाता है जो "कोल्हूको काटकर मूंगरी बनावे" वा "पश्मीनेके शालको फाड़कर डुपट्टा टोपी सिये"

यही नियम विज्ञान और साहित्यमें भी देखा जाता है। जिन इतिहास ग्रन्थोंको सांसारिक और पारमार्थिक नियमों

की रक्षाके निमित्त आर्य्यावर्त्तीय विद्वानोंने निर्माण किया था और जिन इतिहास ग्रन्थोंसे प्रजाको सुचरित्रोंकी तथा राजा और सम्राटोंको सुशासनकी शिक्षा प्राप्त होती थी उन्हीं इतिहास ग्रन्थोंको मुगल सम्राटोंने भस्म कर करके अपने हर्षकी सीमा को बढ़ाया, अब तक भी अनेक पुस्तकोंमें लिखा पड़ा है कि मुसलमानोंके शासनमें प्रतिदिन मनों संस्कृत ग्रन्थ जलाके हम्मामका पानी गर्म किया जाता था।

इस ही दुष्कालके विकराल गालमें संस्कृतके इतिहास ग्रन्थ जब चर्वणसे चले गये तब उस समयके अनाड़ी वा अल्पज्ञ लोगों ने बेतुकी तानके समान "पुराण" नामके नूतन ग्रन्थोंकी रचना करके संस्कृत साहित्यको कलंकित किया।

इन पुराण नामके नवीन पुस्तकोंकी रचना एक तो इस कारण घृणित और बुरी हो गई कि उस समयके हिन्दू भी मुसलमानोंका अनुकरण करना उत्तम और हितकारी समझते थे दूसरे अनेक विषयोंमें परतन्त्र थे, तीसरे उस समयके श्रीमान् लोग काव्यप्रिय थे, चतुर्थ पुस्तक प्रणेता ब्राह्मण लोग ऐसे निर्धन हो गये थे कि जिस राजो वा जमीदारके बंशका वर्णन करने लगे, उस वंशको श्रीरामचन्द्रतक पहुंचा दिया और उसके प्रत्येक पुरुषको दिग्वीजयी और चक्रवर्ती बनाके छोड़ा, अस्तु—

इन बातोंका क्रमशः इस पुस्तकमें वर्णन किया जायगा किन्तु प्रथम यह दिखाना अवश्य है कि पुराणकारोंने पुराणका क्या लक्षण लिखा है (क्योंकि व्याकरणकी रीतिसे पुरातन शब्द

के तकारको लोप करनेसे वा एक पक्षमें तुडागम न करनेसे अथवा पृषोदरादिगणके अन्तर्गत पुराण शब्दकी सिद्धि माननेसे यह व्युत्पति हो जायगी कि "पुराणवभवतीतिपुराणम्" जो पहिले नया हो उसे पुराण कहते हैं परन्तु इस अर्थसे घटपटादि सभी पदार्थ पुराण शब्दवाच्य हो जायँगे इस कारण पुराण प्रणेताओंने पुराण शब्दको लाक्षणिक माना है)।

पुराण वलोंने जो पुराणोंके लक्षण लिखे हैं उनमें भी परस्पर मत भेद है और न वह लक्षण पूरी रीतिसे घटते हैं, पुराणोंका सामान्य लक्षण यह है।

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशा मन्वन्तराणि च।
वंश्यानुचरितंचैव पुराणं पञ्च लक्षणम्॥

जिसमें सर्ग नाम जगत्की उत्पतिका वर्णन, प्रतिसर्ग प्रलय का वर्णन सृष्टिके आरम्भसे वंश वा कुलोंका वर्णन मन्वन्तरोंकी व्यवस्था और अनेक कुलोंमें उत्पन्न हुए प्रधान पुरुषोंके चरित्रों-का वर्णन हो उसे (वा उन्हें) पुराण करते हैं। इन लक्षणोंके विरुद्ध भागवतके १२ स्कन्धके ७ अध्यायमें लिखा है।

सर्गोस्याथविसर्गश्च वृत्तिरक्षान्तराणिच।
वंशोवंश्यानुचरितम् संस्थाहेतुरपाश्रयः॥ १॥
दशभिर्लक्षणैर्युक्तम् पुराणन्तद्विदोविदुः।
केचित्पञ्चविधंब्रह्मन् महदल्पव्यवस्थयाम्॥२॥

भागवत वालेने पुराणोंके दो भेद माने हैं एक अल्पपुराण

और दूसरा महापुराण, प्रकृतिसे लेकर इन्द्रियों और उनके विषय पर्य्यन्तकी रचनाको सर्ग बीज बननेके तुल्य कार्य्य सृष्टिके प्रवाह वर्णनका नाम विसर्ग, जड़ वा चेतनसे अथवा दोनोंसे प्राणियों के भोजन निर्वाहको वृत्ति तिर्य्यक वा मनुष्य योनिमें जन्म लेकर जो ईश्वर दुष्ट दैत्योंका वध करता है और जगत्की रक्षा करता है उसे रक्षा कहते हैं मनु मनुपुत्र देवता, ऋषि इन्द्र और अंशावतारोंका वर्णन मन्वन्तर कहाता है। ब्रह्मासे उत्पन्न हुये राजाओंकी त्रैकालिक वंश परम्पराका दिखाना वंश वर्णन, शुद्ध वंशोंमें उत्पन्न हुए विशेष पुरुषोंके चरित्रके वर्णणका वैश्यानु-चरित कहते हैं चार प्रकार अर्थात् नित्य नैमित्तिक स्वभाविक और महाप्रलयके वर्णणको संस्था जीवके अविद्यादि बन्धनोंके वर्णनके हेतु और मुक्ति वर्णनको अपाश्रय कहते हैं इन दश लक्षणोंसे जो युक्त हो उसकी महापुराण संज्ञा है।

अब विचारणीय विषय यह है कि भागवत वालोंने जिन पुस्तकोंके वास्ते इन लक्षणोंको गढ़ा है उनमेंसे कोई भी पुस्तक ऐसा नहीं हैं जिसमें यह सब लक्षण घटते हों अधिक क्या कहें खुद भागवत सरीफमें ही सब लक्षण नहां घटते इन पुराणोंकी संख्याका गड़बड़ दिखानेके अनन्तर क्रमशः दश लक्षणोंका खंडन लिखा जायगा।

देवी भागवत स्कन्ध १२ के ७ अध्याय में पुराणोंकी संख्या यों लिखी है।

ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैव लैङ्ग सगारुडम्।

नारदीयं भागवतमाग्नेयं स्कन्दसंज्ञितम् ॥
भविष्यं ब्रह्मवैवर्त्तम् मार्कण्डेयं सवामनम् ।
वाराहमात्स्यकौर्म्यं च ब्रह्मांडाख्यमितित्रिषट् ॥

अर्थात् यही १८ महापुराण हैं । १ ब्रह्मपुराण, २ पद्म०, ३ विष्णु०, ४ शिवपु०, ५ लिङ्गपु०, ६ गरुड़पु०, ७ नारदीय०, ८ भागवत, ९ अग्निपु०, १० स्कन्धपु०, ११ भविष्यपु० १२ ब्रह्मवैवर्तपु०, १३ मार्कण्डेय, १४ वामनपु०, १५ बाराहपु०, १६ मत्स्यपु०, १७ कूर्म्मपु०, १८ ब्रह्माण्ड पुराण ।

यद्यपि पुराणोंकी संख्या सर्वत्र १८ ही लिखी है तथापि आजकल २१ पुस्तक महापुराणके नामसे और २० पुस्तक उपपुराणोंके नामसे प्रचलित हो रहे हैं । यथा-विष्णुपुराण १, भागवत २, नारदीयपु० ३, गरुड़पु० ४, पद्मपु० ५, बाराह ६, ब्राह्म ७, ब्रह्माण्ड ८, ब्रह्मवैवर्त ९, मार्कण्डेय १०, भविष्य ११, वामन १२, वायु १३, लिङ्ग १४, स्कन्ध १५, अग्नि १६, मत्स्य पु० १७, कूर्म्म १८, भागवत १९, वह्निपु० २०, पुरानाब्रह्म वैवर्त २१ ।

उपपुराणः--१ नृसिंहपु०, २ बृहन्नारदीयपु०, ३ शिवपु०, ४ दुर्बासापु०, ५ कपिलपु०, ६ मानवपु०, ७ औशनसपु०, ८ वरुणपु०, ९ कालिकापु०, १० साम्बपु०, ११ नन्दीपु०, १२ सौर पु०, १३ पाराशरपु०, १४ आदित्यपु०, १५ माहेश्वरपु०, १६ भार्गवपु०, १७ वाशिष्ठपु०, १८ भविष्यपु०, १९ ब्रह्माण्ड, २०

कूर्म्मपुराण। (देखो पण्डित अक्षय कुमारदत्तकी बनायी भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदायकी भूमिका)

पुराणोंको कब किसने बनाया ?

पुराणोंके माननेवालोंका विश्वास और कथन है कि १८ हों पुराणोंको महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यासने बनाया क्योंकि भागवतमें यही लिखा है।

अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवतीसुतः ।
भारताख्यानमतलं चक्रे तदुपबृंहितम् ॥

अर्थात् सत्यवतीके पुत्र व्यासने १८ पुराण और महाभारतके भारी आख्यानको बनाके पश्चात् भगवत्को बनाया परन्तु इस श्लोकसे यह सिद्ध हो जाता है कि भागवत् व्यासदेवकी बनाई नहीं है क्योंकि उसही भागवत्में लिखा हैं कि भगवान् विष्णुने ब्रह्माको ४ श्लोककी भागवत्का उपदेश किया इससे सिद्ध हुआ कि भागवत्के मूल ४ श्लोक विष्णुके बनाये हैं व्यासके नहीं फिर जहां पर सूत और शौनकादिका संवाद है वह श्लोक न सूतके बनाये हो सकते हैं और न शौनकके। वरन वह किसी तीसरेके ही बनाये हैं। क्योंकि उन श्लोकोंमें प्रथम पुरुषकी क्रिया दी गई हैं।

जो लोग व्यासको ही सब पुराणोंका कर्त्ता मानते हैं। उनको आंख खोलकर विष्णुपुराण पढ़ना चाहिये जिसके आरम्भमें ही लिखा है कि हे मैत्रेय! जब मैंने अपने दादा वशिष्टके

कहनेसे राक्षसोंको नाश करनेवाला यज्ञ बन्द किया तब उन्होंने प्रसन्न होके मुझे यह बर दिया।

पुराणसंहिताकर्त्ता भवान् वत्स भविष्यति।
दैवतापरमार्थं च यथावद्वेत्स्यतेभवान्॥

अर्थात् तुम पुराण संहिताके बनाने वाले और ब्रह्मज्ञानके यथावत् जानने वाले होगे। विष्णुपुराणके इस श्लोक और उपाख्यानसे स्पष्ट सिद्ध होता है कि पुराण भी अपनेको व्यास का वनाया सिद्ध नहीं कर सकते हैं मार्कण्डेयपुराणमें तो व्यास और सूतकी कथाका कुछ सम्बन्ध ही नहीं रखा हैं अस्तु यह तो सब पुराणोंकी ही बात है।

अब हम विद्वानोंकी सम्मति और प्रमाणोंसे यह सिद्ध करना चाहते हैं कि पुराण ग्रन्थ न एक समयके बने हैं और न किसी एक मनुष्यके बनाये हैं।

भागवतादि पुराणोंमें भी राधाका नाम नहीं लिखा है परन्तु ब्रह्मवैवर्तमें लिखा है कि—

राधा शब्दस्यव्युत्पत्तिः सामवेद प्रकीर्त्तिता

(राधा शब्दकी व्युत्पति सामवेदमें लिखी है)

इसके अतिरिक्त ब्रह्मवैवर्त पुराणके प्रकृति खण्ड ५१ अध्याय में लिखा है।

आदौराधांसमुच्चार्य्यपश्चात् कृष्णं चमाधव-
मप्रवदन्तीतिवेदेषु वेदविद्भिः पुरातनैः।

विपरीतं येवदन्ति निन्दन्ति च जगत्प्रसूम्
ते पच्यन्ते कालसूत्रौ यावदिन्दुदिवाकरौ ॥
भवन्ति स्त्रीपुत्रहीनाः रोहिणः सप्तजन्मसु ।

प्रथम तो यह श्लोक ही अशुद्ध है द्वितीय राधा और कृष्ण का एकत्र नाम लिखा रहनेसे स्वयम् सिद्ध होता है कि राधा वल्लभीय सम्प्रदायके चलाने वाले हरिवंश नामक वैष्णवने इस पुराणकी रचना करके वा करवाके १६४१ विक्रमाब्दमें इसका प्रचार किया एक महाशयकी यह भी सम्मति है कि इन्हीं हरिवंशजीने हरिवंशका भी प्रचार किया ।

पण्डितवर बाराहमिहर* ने अपने समयके प्रचलित और मान्य पुस्तकोंकी जो सूची लिखी है उसमें भी पुराण ग्रन्थोंके नाम लिखे नहीं हैं ।

पण्डित बाराहमिहरने जो मथुरापुरीका वर्णन किया है उसमें लिखा है कि मथुरापुरीमें बौद्धोंके बड़े बड़े २० मन्दिर और २००० बौद्ध धर्मोपदेशक हैं इनके अतिरिक्त चीनके प्रसिद्ध यात्री फाहियानने खीष्टाब्दकी ५वीं शताब्दिमें जो भारतकी यात्रा की थी उस बारके यात्रा पुस्तकमें उसने लिखा है कि मथुरापुरी बौद्ध मन्दिरोंसे परिपूर्ण हो रही है ।

---

* यह भारतके अन्तिम इतिहास प्रणेता हुए हैं और इनके राजतरंगिनी तथा ऋषितरंगिनी आदि प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ बनाये हुए हैं ।

अब पाठकोंको यह परिज्ञानहो सकता है कि जिन पुराण में मथुरापुरीको विष्णुके मन्दिरोंसे परिपूर्ण लिखा है वह सब पुराण खीष्टाब्दकी पांचवी शताब्दिके पश्चात् बनाये गये हैं।

इस बातको सम्पूर्ण इतिहासवेत्ता स्वीकार करते हैं कि महाराज बुद्धदेवने (जिनका नाम शाक्य मुनि भी है) महाराज शुद्धोदनकी पत्नी मायादेवीके गर्भसे कपिलवस्तु नामक नगरमें जन्म ग्रहण किया था, इनके जन्मका समय ईसामसीहके जन्मसे ५०० वर्ष पूर्व निर्णीत हुआ हैं जिन ग्रन्थोंमें बुद्धदेवका नाम है वह अवश्य ही बुद्धदेवके पश्चात् बने होंगे पद्मपुराणसे निकले हुये गया महात्म्यमें लिखा है कि:—

धर्म्मं धर्म्मेश्वरन्नत्वा महाबोधितरं नमेत्।

महाराज शाक्यमुनिको मृत्युके पश्चात् बुद्ध गयाको बौद्धोंने तीर्थ माना था इससे अनुमान होता है कि बुद्धदेवके मृत्युके पश्चात् पद्मपुराण बना है।

जिस पौण्ड्रक वासुदेवकी कथा भागवतादि अनेक पुराण ग्रन्थोंमें लिखी है उसके सिक्के जो दक्षिण देशमें एक भूमिखण्ड को खोदनेसे निकले थे उनपर लिखे वर्षोंकी संख्याको जोड़नेसे यह सिद्ध हो चुका है कि पौण्ड्रक वासुदेव खीष्टाब्दकी दूसरी शताब्दिमें मौजूद था इससे यह सिद्ध होता है कि जिन पुराणोंमें उनकी कथा है वह सब खीष्टाब्दकी दूसरी शताब्दिके पश्चात बने हैं।

ब्रह्मवैर्त्तादिकी भविष्यत् बाणियोंके पढ़नेसे जाना जाता है

कि वह ग्रन्थ मुसलमानोंके भारताक्रमणके पश्चात् बने हैं क्योंकि उनमें यह लिखा है कि कांची और काश्मीर मण्डलका राज्य यवन लोग करेंगे।

गान्धारं सिन्धुसौवीर कांचीकाश्मीरमण्डलम् ।
भोक्ष्यन्तिनिन्द्यकृतयः यवनः कलि दूषितः ॥

अर्थात् यवन लोग कन्धार, सिन्ध, कांची और काश्मीरमें राज्य करेंगे इससे साफ मालूम होता है कि जब मुसलमानीराज्य उक्त देशोंमें होगया था तब ब्रह्मवैवर्त्त पुराण बना था, यदि यह भविष्यवाणी होती तो समस्त भारतखण्डको ही लिखते कि यवनोंके आधीन हो जायगा अस्तु—

इत्यादि अनेक प्रमाणोंसे यह सिद्ध हो चुका है कि बौद्ध राजोंके पश्चात् और यवनोंके समयमें पुराणोंकी रचना हुई अब यह भी विचारना चाहिए कि पुराण ग्रन्थोंकी रचना किसी एक ममुष्यने की वा अनेकोंने इनको रचा!

पुराण पुस्तकोंको पढ़नेसे यही सिद्ध होता है कि इन सब पुस्तकोंका बनाने वाला कोई एक मनुष्य नहीं था, क्योंकि कोई भी मनुष्य ऐसो नहीं हो सकता है जो अपने वचनोंका स्वयम् खण्डन कर दे वा अपने एक लेखके प्रतिकूल दूसरा लेख लिखे।

यदि भागवत और विष्णु पुराण एक ही मनुष्यके बनाये होते तो यह परस्पर भेद न होता कि एक जगह कृष्णको साक्षात् ईश्वर और दूसरी जगह नारायणके बालका अंश कहा जाता। भागवतके १० स्कन्ध अध्याय ३३ में लिखा है।

संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमायेतरस्य च ।
अवतीर्णो हि भगवान् अंशेनजगदीश्वरः ॥

अथवा

एतेषांशकला पुंसः कृष्णस्तु भगवान्स्वयम् ।

अर्थात् धर्मके स्थापन और अधर्मके नाश करनेको भगवान्ने अंशसे स्वयम् अवतार धारण किया अथवा और सब अवतार भगवान्के अंश वा कला है और कृष्ण साक्षात् भगवान् है परन्तु इसके विरुद्ध विष्णु पुराणमें लिखा है ।

ऐवंसस्तूयमानस्तु भगवान् परमेश्वरः ।
उज्जहारात्मनः केशौ सितकृष्णौमहामुने ।
उवाचचसुरानेतौ मत्केशौ वसुधातले ।
अवतीर्य्यभुवोभारक्लेशहानिंकरिष्यतः ॥
वसुदेवस्ययापत्नो देवकीदेवतोपमा ।
तस्यायमष्टमोगर्भो मत्केशोभवितासुराः ॥
अवतीर्य्य च तत्रायं कंसंघातयिताभुवि ।
कालनेमिसमुद्भूत मित्युक्त्वान्तर्दधेहरिः ॥

वि० पु० ५-१ ।

अर्थात् देवतोंने जब नारायणकी स्तुति करी तब उसको सुन के परमेश्वरने अपने दो वाल उखाड़े और देवतोंसे कहा कि मेरे यह काला और सफेद दो वाल पृथ्वीमें जन्म लेकर भूमिके भार को उतारेंगे देवताके समान जो वसुदेवकी स्त्री देवकी है उसके

आठवें गर्भसे मेरा यह केश उत्पन्न होके कालनेमिसे उत्पन्न हुए कंसको मारेगा ऐसा कहके भगवान् गुप्त हो गये। विचारनेका स्थल है कि जो ग्रन्थकार कृष्णको साक्षात् परमेश्वर कहेगा, वही कृष्णको वाल क्यों बतलावेगा।

पुराणोंकी रचनासे जान पड़ता है कि आधुनिक सम्प्रदाय वालोंने अपने अपने इष्टदेवको सर्वाग्रगण्य सिद्ध करनेके निमित्त ही जुदे जुदे पुराण बनाये हैं क्योंकि वैष्णवोंके पुराणोंमें शिवको परम तुच्छ और उनकी भक्ति करनेको पाप लिखा है ऐसे ही शैवोंके पुराणमें विष्णुको तुच्छ और उनकी भक्तिको पाप लिखा है यथा पद्मपुराणके उत्तर खण्डके ७८ अध्यायमें लिखा है।

मोहाद्यःपूजयेदन्यम् सपाखण्डीभविष्यति।
इतरेषान्तुदेवानाम् निर्माल्यं गर्हितम्भवेत्
सकृदेवहियोऽश्नाति ब्राह्मणोज्ञानदुर्वलः।
निर्माल्यं शंकरादीनाम् सचांडालोभवेद्ध्रुवम्
कल्पकोटिसहस्राणि पच्यतेनरकाग्निना॥

जो मनुष्य मोहवश विष्णुको त्याग कर दूसरे देवताको पूजता है वह पाखण्डी होता है।

विष्णुके सिवाय और देवतोंपर चढ़ा हुआ पदार्थ जो ब्राह्मण एक वार भी खाता है वह अवश्य चण्डाल होता है और कल्प तक नरककी आगमें जलता रहता है। शिवके अतिरिक्त और देवतोंके भक्तोंकी भी बुराई लिखी है।

सौरस्य गाणपत्यस्य शैवादेर्भूरिमानिनः ।
शाक्तस्य वैष्णवो वारि हस्ते ह्यन्नम्परित्यजेत्
सङ्गं विवर्जयेच्छैवशाक्तादीनान्तु वैष्णवः
न कार्य्या प्रार्थना तेभ्यः तेषांद्रव्यममेध्यवत्

सूर्यके गणेशके शिवके और देवीके भक्तोंका छुआ अन्न औ जल वैष्णव ग्रहण न करे, न उनके संगमें रहे और न उनसे कु मांगे, क्योंकि उनका धन विष्ठाके समान है। इस ही प्रकार शिव-पुराणमें विष्णुके भक्तोंकी निन्दा है।

तथान्यदेवता भक्तिर्ब्राह्मणस्य विगर्हिता
विदुरमति विप्राणाश्चाण्डालत्वं प्रयच्छति ।
तस्य सर्वाणि नश्यन्ति पितरं नरकं नयेत् ॥

अर्थात् शिवको छोड़के दूसरे देवताकी भक्ति करनेसे ब्राह्म चण्डाल हो जाता है और उसका पिता नरकमें जाता है।

बस इन सम्प्रदायिक झगरोंसे सिद्ध होता है कि अने मनुष्योंने इन पुराण नामके पुस्तकोंको रचा है यदि ऐसा न होत तो इनके नाममें झगड़ा न होता आज कल जो पुराणोंमें द भागवत प्रचलित हैं उनके मानने वालोंमें यह झगड़ा है कि वैष्ण लोग श्रीमद्भागवत्को और शाक्तलोग देवीभागवतको महापुरा मानते हैं, अपने अपने मुखसे मियां मिट्ठू बननेके अतिरिक्त दो वादी अन्य पुराणोंके प्रमाण भी अपने पक्षकी पुष्टिमें देते हैं।

यथा पद्मपुराणमें लिखा है:—

शैवमादि पुराणंच देवी भागवतंतथा ।

इसके अतिरिक्त और भी लिखा है।

भगवत्याःकालिकायास्तु माहात्म्यं यत्रवर्ण्यते
नानादैत्यावधोपेतं तद्धि भागवतंविदुः ।
कलौकेचिद्दुरात्मानो धूर्तावैष्यवमानिनः
अन्यद्भागवतंनाम कल्पयिष्यन्ति मानवाः ।

भगवती कालिकाका जिसमें माहात्म्य लिखा हो वह भागवत है कलियुगमें बहुतसे धूर्त्त जो अपनेको वैष्णव मानते हैं दूसरी भागवत बनावेंगे, यदि पुराण एक ही मनुष्यके बनाये होते तो एक पुराणमें दूसरे पुराण बनाने वालेको गाली क्यों लिखी होती।

उपरोक्त प्रमाण और लेखोंसे भली भांति सिद्ध हो गया कि मुसलमानी राज्यके आरम्भमें भिन्न भिन्न सम्प्रदायवालोंने पुराणोंको बनाया है।

पुराणोंमें जैसी निन्दनीय रीतिसे सृष्टि और प्रलयका वर्णन लिखा है उसको इस ही पुस्तकके किसी अन्य भागमें दिखलाया जायगा परन्तु इस स्थानपर केवल इतना प्रकाशित करना आवश्यक है कि पुराणोंमें कैसी मिथ्या कथाओंकी भर्ती कीगई है।

माकण्डेय पुराण जो भारत भरमें प्रसिद्ध है उसका आरम्भ ही ऐसी कथासे भरा है जिसको सुनके पाठक लोग अवश्य हंसेगे उसमें लिखा है—

तपःस्वाध्यायनिरतम् मार्कण्डेयमहामुनिम् ।
व्यासशिष्योमहातेजा जैमिनिः पर्य्यपृच्छत
कस्मान्मानुषतांप्राप्तो निर्गुणोपिजनार्दनः
वासुदेवोजगत्सूतिः स्थितिसंहारकारणम् ।
कस्माच्चपाण्डुपुत्राणामेका साद्र पदात्मजा
पंचानामहिषीकृष्णा ह्यत्रनःसंशयोमहान् ॥
एतत्सर्वं विस्तरशोममाख्यांतुमिहाहसि ।

अर्थात् तप और वेदाध्ययनमें तत्पर रहनेवाले महामुनि मार्कण्डेयसे व्यासके शिष्य महातेजस्वी जैमिनिने पूछा हे महामुने! निर्गुण विष्णुने किस कारणसे मनुष्य रूप धारण किया जो सब जगत्की उत्पत्ति स्थिति और लय करने वाले हैं वह वसुदेवके पुत्र क्यों बने? पांच पाण्डवोंकी एक ही द्रपदपुत्री (द्रौपदी) पटरानी क्यों बनी थी? इत्यादि मेरे संशयोंको आप दूर करने योग्य हैं।

जैमिनिके इन प्रश्नोंको सुनके देखिये क्या मजेदार जबाब दिया है उन्होंने कहाः—मार्कण्डे उवाच—

क्रियाकालायमस्माकं संप्राप्तोमुनिसत्तम !
विस्तरेचापिवक्तव्ये नैषकालःप्रशस्यते ।
येतुवक्ष्यन्तिवक्ष्येद्य तानहंजैमिनेतव
तथाचनष्टसन्देहं त्वांकरिष्यन्तिपक्षिणः ।

महामुनि मार्कण्डेयने कहा कि यह समय हमारे नित्यकर्मका

है और आपके उत्तरमें बहुत कहना पड़ेगा इस कारण तुम पक्षियोंके पास चले जाओ वह तुम्हारे सन्देहोंको दूर करेंगे। द्रोणनामक पक्षीके चार पुत्र जिनमेंसे एकका नाम पिङ्गलाक्ष दूसरेका नाम विवोध तीसरेका नाम सुपुत्र और चौथेका नाम सुमुख है वह सब वेद और शास्त्रके जानने वाले और महाज्ञानी हैं।

मार्कण्डेयके मुखसे चिड़िया खानेके अद्भुत पक्षियोंकी बात को सुनके महर्षि जैमिनि बड़े घबड़ाये और पूछने लगे कि महाराज! उन पक्षियोंको ऐसा ज्ञान क्योंकर हुआ जो ज्ञान देवता को भी होना दुर्लभ है। द्रोणनामक पक्षी कौन था जिसके ऐसे ज्ञानी पुत्र हुए?

जैमिनिके प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिये महर्षि मार्कण्डेयको पूरे तीन अध्याय जिनमें २०२ श्लोक हैं कहने पड़े और इनमें इन्द्रके अखाड़ेमें नारदका जाना एवम् वहां अप्सराओंका नाच देखना अप्सराओंका परस्पर झगड़ा करना उस झगड़ेको मिटाने के वास्ते दुर्वासा ऋषिको काम मोहित करनेकी परीक्षाको नियत करना,फिर दुर्वासाको अप्सराको पक्षिणी बननेके निमित्त शाप देना इसके पश्चात् गरुड़के वंशका वर्णन गरुड़के पुत्रों से और एक राक्षससे घोर युद्धका होना फिर उन चार पक्षियों के पूर्वजन्मका वर्णन लिखा हैं कहिये तो इतने जटिल काफिये कहनेकी तो हजरतको छुट्टी थी और इनके वास्ते काफी वक्त भी मिल गया मगर जैमिनि मुनिके असल प्रश्नोंका उत्तर देनेका वक्त न मिला वाहजी! लाल बुझक्कड़जी खूब पुराण बनाया।

मार्कण्डे पुराणमें जितनी कथा हैं वह सब उन ही ४ पक्षियों की कही हुई हैं जिनका वर्णन पूर्व लिख चुके हैं इससे इस पुराण को चिड़ियाखानेका पुराण कहना चाहिये इस ही प्रकार के पुराणोंमें जटिल काफिये भरे हैं जिनको कोई बुद्धिमान नहीं मान सकता है।

देवीभागवतमें लिखा है कि एक दत्यने तपस्या करके शिव महराजसे ऐसे पुत्रका वर पाया जो ब्रह्मादिकसे न मारा जाय और न कोई मनुष्य उसको जीत सके परन्तु जब वह वर पाके घरको लौटा आता था और मनमें विचार रहा था किसी सुन्दरी स्त्री से विवाह करके अजेय पुत्र उत्पन्न करूंगा इतनेमें उसने देखा कि एक भैंसा भैंसको रगेदे फिरता है दैत्यने बिना समझे भैंसको मार डाला तब भैंसने कहा कि रे मूर्ख! मैं कामार्त्ता हूं और तैंने मेरे भैंसेको मार डाला या तो तू मेरे साथ रति कर नहीं तो मैं शाप दूंगी भैंसके शापसे डरके उस दैत्यको भैंससे रति करनी पड़ी शिव महराजने दैत्यको वर देते समय यह भी कहा था कि जिस स्त्रीसे प्रथम तुम रति करोगे उसके ही गर्भसे अजेय पुत्र उत्पन्न होगा बस उसही भैंससे महिषासुरकी उत्पत्ति हुई।

इस किस्सेने तो फसाने अजायब और अलिफलैलाके किस्से को भी मात कर दिया।

पुराण ग्रन्थ मुसलमानोंके समयमें बनाये गये हैं इसमें एक प्रमाण यह भी है कि देवी भागवतके स्कन्ध ६ अध्याय ८में लिखा

है कि कलियुगमें सब लोग यवन हो जायंगे, यह भविष्यत्वाणी होती तो अङ्गरेजोंका नाम क्यों न होता, यवनों का नाम लिखे रहनेसे स्पष्ट सिद्ध होता है कि मुसलमानोंने जब भारतपर आक्रमण किया उसके पश्चात् देवीभागवतकी रचना हुई।

इसके अतिरिक्त इस देशके प्राचीन पुस्तकोंके देखनेसे और अबके पुराने इतिहासोंके विचारनेसे यह सिद्ध होता है कि आर्यावर्त्त देशमें नरबलि (अर्थात् किसी देवताके निमित्त आदमीकी कुर्बानी करना) की रीति प्रचलित नहीं थी जब नरबली करने वाले मुसलमानोंका इस देशमें आवा गमन होने लगा तब इस देशके निवासी भी यवनों कीं रीतियोंको ग्रहण करने लगे देवी भागवतके सप्तम स्कन्धमें एक नरबलीकी अद्भुत कथा लिखी है।

देवीभागबतके स्कन्ध ७ के १६ अध्यायसे इस कथाका आरम्भ हुआ है। लिखा है कि सूर्यवंशी महाराज हरिश्चन्द्रने पुत्र प्राप्तिके निमित्त महाराज वरुणकी तपस्या की तपसे प्रसन्न होके वरुण देवता प्रकट हुए और राजा हरिश्चन्द्रसे कहा कि यदि तुम मेरे निमित्त यज्ञ करो और उस यज्ञमें अपने पुत्रका बलिदान करो तो मैं तुमको पुत्र दूं महाराज हरिश्चद्रने इस बातको स्वीकार किया तब उसकी स्त्रीके रोहितास्व नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजाको इस पुत्रका इतना मोह बढ़ा कि १२ वर्ष तक पुत्रका बलिदान न किया राजा हरिश्चन्द्रने अनेक वार प्रतिज्ञा करके भी अपने पुत्रका बलिदान न किया तब वरुण देवताने क्रोध करके शाप दिया कि तू ने मेरे साथ छल किया इससे तुझे जलोदरका

रोग होगा, राजकुमार रोहिताश्व पिताकी प्रतिज्ञाको सुनके प्रथम ही बनको चला गया था किन्तु पिताको रोग पीड़ित सुन के फिर घर चला आया, तब राजाने यज्ञ करनेका विचार किया परन्तु पुत्रके मोहसे राजा बलि देनेमें हिचकते थे इस कारण उन्होंने महर्षि वशिष्ठसे प्रश्न किया कि महाराज किस उपायसे मेरा यज्ञ पूरा हो वशिष्ठने कहा कि मोल लिया हुआ बालक आठ प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक होता है इस कारण तुम किसी ब्राह्मणके पुत्रको मोल ले के उसका बलि करो राजाने वैसाही किया अर्थात् अजीगर्त्त नामक ब्राह्मणके मझले पुत्रको मोल लेके बलि देनेको उद्यत हुआ परन्तु विश्वामित्रने यज्ञमें पहुंचके उसे बरुण देवताका मन्त्र बतलाया और उसके जपनेसे बरुण देवताने प्रकट होके पुनः शेपकी रक्षा की।

यह क ा ठीक उस कहानीकी नक़ल है जो मुहम्मद इस्माईल साहिबके पिता मुहम्मद इब ाहिमके विषयमें सुनी जाती है।

पुराणोंकी कथाओंको आद्योपान्त विचारनेसे यही सिद्ध होता है कि यह सब पुस्तक मुसलमानोंके समयमें बनाये गये हैं।

यह भी अनेक लोगोंको विदित नहीं है कि पुराणवाले "ईसामसीह" के समान बिना पितृसंयोगके बलरामकी उत्पत्ति मानते हैं हम नहीं जानते कि बलदेवकी उत्पत्तिकी कथा बायबिलको देखके गढ़ी गई है वा बायबिलके बनाने वालेने भागवतको देखके ईसामसीहकी जन्मकी असम्भव कहानी बनाई है, जो हो परन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि इसअसम्भव कहानीका कुछ भी सिर

पैर नहीं है, इस बातको कौनसा मनुष्य स्वीकार कर सकता है कि एक स्त्रीका गर्भ (गर्भस्थमासपिण्ड) दूसरी स्त्रीके गर्भमें चला गया ।

भागवतके दशम स्कन्ध अ० २ में लिखा है ॥

हतेषु षट्सु बालेषु देवक्या औग्रसेनिना ॥४॥
सप्तमो वैष्णवं धाम यमनन्तं प्रचक्षते ।
गर्भोबभूव देवक्या हर्षशोकविवर्द्धनः ॥५॥
भगवानपि विश्वात्मा विदित्वा कंसजंभयम् ।
यदूनांनिजनाथानाम् योग मायांसमादिशेत् ॥६॥
गच्छ देवि व्रजं भद्रे गोपगोभिरलंकृतम् ।
रोहिणी वसुदेवस्य भार्य्यास्ते नन्दगोकुले ॥७॥
अन्याश्च कंससंविग्ना विवरेषु वसन्तिहि ।
देवक्या जठरे गर्भं शेषाख्यंधाममामकम् ॥८॥
तत्संनिकृष्य रोहिण्या जठरे संनिवेशय ।
गर्भसंकर्षणात्तं वै प्राहुः संकर्षणम्भवि ।
रामेति लोकरमणात् बलं बलवदुच्छ्रयात् ।१३।
सन्दिष्टैवं भगवता तथत्योमितितद्वचः ।
प्रतिगृह्य परिक्रम्य गाङ्गतात्तथा करोत् ।१४।
गर्भे प्रणीते देवक्या रोहिणीं योगनिद्रया ।
अहो विस्रंसितो गर्भ इति पोरा विचुक्रुशुः ।१५

इन श्लोकोंका तात्पर्य यह है, कि उग्रसेनके पुत्र कंसने जब

देवकीके ६ पुत्र मार डाले तब विष्णुका शयन स्थान जिसको अनन्त (शेषनाग) कहते हैं वह सातवें गर्भमें आया, देवकीका वह सतवां गर्भ हर्ष और शोकका बढ़ाने वाला हुआ, तब जगत्-व्यापक भगवान् (विष्णु) ने अपने दास यदुवंशियोंको कंशके डरसे व्याकुल देखके योगमाया (देवी) को आज्ञा दी हे देवी ! तुम ग्वाले और गौओंसे भरे हुए व्रजमें जाओ गोकुलमें वसुदेव की स्त्री रोहिणी रहती है, उसके उदरमें मेरे निवासस्थान शेष को देवकीके उदरसे निकालके पहुंचा दो (वा स्थापन कर दो)

गर्भ अवस्थामें जो वह खींच कर दूसरे गर्भमें पहुंचाये गये इससे उनका नाम संकर्षण, लोकमें रमण करनेसे राम औ अत्यन्त बलवान होनेसे बल जगत्में प्रसिद्ध होगा। योगमाया (देवी) भगवतसे ऐसी आज्ञा पाकर और उसे स्वीकार करके पृथ्वीमें गई और वैसे ही कार्य्य किया। योगमायाने जब देवकी के गर्भको निकाल के रोहणीके उदरमें पहुंचा दिया तब शहरके रहने वालोने ओः गर्भपात होगया ऐसा कहके शोक किया।

अब इसमें प्रश्न यह है कि प्रत्येक स्त्रीका गर्भाशय नसोंसे ऐसा जकड़ा रहता है कि उसके निकल जानेसे कोई स्त्री नहीं बच सकती है, यदि गर्भाशय को छोड़ कर योगमायाने देवकीके गर्भको रोहिणीके गर्भमें पहुंचाया तो उसका पुनः संस्थापन क्यां कर हुआ यदि गर्भाशयके सहित पहुंचाया तो देवकी क्योंकर जीवित रही, यह पौराणिकोंकी लीला ईसाइयोंकी लीलासे किसी अंशमें कम नहीं है।

अब एक और अद्भुत कथा सुनिये बलरामकी स्त्री रेवती न मालूम कितने करोड़ वर्षोंकी थी, लिखते हंसी आती है कि जब बलदेवके परदादाका भी जन्म नहीं था तब रेवती ब्रह्माकी सभा में बैठी हुई गन्धर्वोंके गीत सुन रही थी।

श्री मद्भागवतके नवम स्कन्ध अ० ३ में यह अद्भुत कथा लिखी है।

उत्तानबर्हिरानर्तो भूरिषेण इति त्रयः।
शर्य्यातेरभवन्पुत्रा आनर्त्ताद्रेवतोऽभवत् ।२७।
सोन्तः समुद्रे नगरीम्बिनिर्मायकुशस्थलीम् ।
आस्थितो भुंक्तविषयानानर्त्तादीनरिंदम ।२८।
तस्य पुत्रशतं यज्ञे ककुद्मिज्येष्ठमुत्तमम् ।
ककुद्मी रेवती कन्यां स्वामीदायविभुंगतः ।२९।
पुत्रया वरं परिप्रष्टुं ब्रह्मलोकमपाव्रतम् ।
आवर्त्तमानेगान्धर्वे स्थितोलब्धक्षणःक्षणम् ।३०
तदन्त आद्यमानम्य स्वाभिप्रायंन्यवेदयत् ।
तच्छ्रुत्वाभगवानब्रह्मा प्रशस्यतवमुवाचह ।३१
अहो राजन्निरुद्धास्ते कालेन हृदयेकृताः ।
तत्पुत्रपौत्रनप्तृणां गोत्राणि चनश्रण्महे ।३२।
कालोभियातस्त्रिणवचतुर्युगविकल्पितः ।
तद्गच्छदेव देवाशी नरदेवो महाबलः ।३३।
कान्यारत्नमिदं राजन् नररत्नायदेहिभो।

भुवो भारावताराय भगवान् भूतभावनः ।३४।
अवतीर्णो निजांशेन पुण्यश्रवणकीर्त्तनः ।
इत्यादिष्टोभिवाद्याजं नृपः स्वपुरमागतः ।३५।
त्यक्तं पुण्यजनत्रासात् भ्रातृ भिर्दिक्षुसंस्थितैः ।
सुतां दत्वा नवद्यांगी बलाय बलशालिने ।
बदर्य्याख्यं तपोराजा नरं, नारायणाश्रमम् ।३६।

इन सब श्लोकोंका अभिप्राय यह है कि राजा शर्य्यातिके उत्तानबर्हि, आनर्त और भूरिषेण यह तीन पुत्र उत्पन्न हुए। आनर्तका पुत्र रेवत हुआ जिसने समुद्रके बीचमें कुशस्थली नगरी वसाई और आनर्त के १०० पुत्र हुए इनमें ककुद्मी सबसे बड़ा था राजा ककुद्मी अपनी पुत्री रेवतीको साथ लेके आदिदेव ब्रह्माके पास गया, ब्रह्माकी सभामें उस समय गन्धर्व गान कर रहे थे इस कारण राजा ककुद्मी क्षणमात्र (मौका पानेके वास्ते चुप रहे जब गन्धर्व गा चुके तब राजा ककुद्मीने ब्रह्मासे अपना अभिप्राय कहा (पूछा कि इस कन्याके योग्य वर बतलाइये) ब्रह्माने हंसकर कहा कि राजन् ! तुमने जिन राजपुत्रोंके साथ अपने हृदयमें इस कन्याका विवाह करना बिचारा था उनके पुत्र पौत्र और नातियोंका तो क्या उनके गोत्रोंका भी अब चिह्न नहीं रहा है, जितनी देर तुम यहां खड़े प्रतीक्षा करते रहे उतनेकालमें चारों युग २७ वार व्यतीत हो चुके अब संसारमें पृथ्वीका भार उतरनेको स्वयम् भगवान्ने अवतार लिया हैं तुम उन्हीं नररत्न बलरामसे इस कन्या रत्नका विवाह कर दो ब्रह्मा की इस आज्ञा

को सुनके राजा ककुद्मी अपने नगरमें आये और अपने नगरके गन्धर्वोंके भयसे तथा स्वजन शून्य जानके त्याग दिया और बलरामके साथ रेवतीका विवाह करके आप बद्रिकाश्रममें तप करनेको चला गया।

पाठक! विचारिये तो कि मुसलमानोंके बहिश्तमें जो हूरें रहती हैं उनको बुढ़ापेका दुःख नहीं होता परन्तु वह बहिश्तसे जमीन पर नहीं आती हैं और न बहिश्तमें गये आदमी यहां फिर कर आते हैं किन्तु पुराण वालोंके बहिश्त (ब्रह्मलोक) से राजा ककुद्मी अपने कन्याके सहित लौट आये रेवतीको वृद्धावस्था न आई खैर यह भी सही परन्तु उस बिवाहमें ज्योतिषियों ने गोत्रादिका मिलान क्यों कर किया था? और बलरामसे युगों बड़ी रेवतीका बिवाह कैसे काशी नाथके शीघ्रबोधसे शुद्ध हुआ! क्या कोई पौराणिक पण्डित कह सक्ता है कि यह बिवाह जन्मकुण्डलोके मिलानसे हुआ था! क्या २७ चौकड़ी युग बीत जाने पर भी सब ग्रहोंको चाल ज्योंकी त्यों बनी रही थी? यदि नहीं तो भारत धर्म महामण्डल रेवती और बलरामके विवाहको धर्म विवाह कह सकता है? सत्य तो यह है कि ऐसे ही जटल काफियोंसे भागवत आदि पुराण परिपूर्ण है और उनको ही मूर्ख लोग अपना धर्म पुस्तक मान रहे हैं।

गणेशदेवकी और कार्त्तिकेयकी अद्भुत उत्पतिको सुनके किसे हंसी नहीं आती देखो शिवपुराणमें लिखा है कि एकवार श्रीपार्वतीजी [illegible] पतिसे रुष्ट हो गई और

पुस्तकालय क्रमांक 2898
दयानन्द महिला महाविद्यालय,

कैलोशसे पृथक् स्थानमें जा रही इधर भोलानाथ महादेवको पार्वतीजीके विरहमें असह्य वेदना होने लगी, तब महादेवने अपने शृंगी भृंगी आदि गणोंको पार्वतीजीके ढूंढ़नेको भेजा महादेव के गणोंने पार्वतीजीका खोज लगाके श्रीशंकर महाराजको सूचना दी और भोलानाथ स्वयं डुण्डे बैल पर सवार होकर गिरिनन्दिनीके आश्रम पर आये इधर पार्वतीने स्नान करनेकी इच्छा की और अपने शरीरका मैल उतार कर उससे एक पुतला बनाया पश्चात् पुतलेमें जीव डालके अपने आश्रमके द्वार पर बैठा दिया और उसे समझा दिया कि मैं जब तक स्नान न कर चुकूं तब तक कोई भी पुरुष आश्रमके भीतर न आने पावे । यह पुतला पार्वतीजीके आदेशानुसार द्वार रक्षा कर रहा था कि इस अवसरमें श्री महादेवजीने अपने दल बलके सहित आके आश्रममें प्रवेश करना चाहा परन्तु उक्त पुतलेने महादेवको रोका इस ही कारण दोनोंमें घोर युद्ध होने लगा उस युद्धमें महादेवने उक्त पुतलेका सिर काट डाला, इस समाचारको सुनके पार्वतीजी अत्यन्त व्याकुल हुई और रोकर महादेवसे कहा कि यदि आप इस पुतलेको न जिलावेंगे तो मैं मर जाऊंगी तब तो महादेवजी बड़े घबड़ाये और कहने लगे कि प्रिये ! इस पुतलेका सिर कट गया और उसे देवतोंने ले जाके चन्द लोकमें रक्खा है, इस कारण इसका पुनः जीवित होना कठिन है, पार्वतीजीने फिर वही कहा कि यदि यह पुतला न जीवेगा तो मैं मर जाऊंगी। लाचार होके महादेवने अपने दूतोंको आज्ञा दी कि किसी बालक

का सिर काट लाओ। रात्रीके समय एक हथिनी अपने बच्चे की ओरसे पीठ फेर सोती थी बस महादेवके दूत उसही बच्चे का सिर काट कर ले आये, श्री भोलानाथ महादेवजीने उसही सिरको उक्त पुतलेके धड़ पर रख दिया, तबसे उसही पुतलेका नाम गणेश रक्खा गया। पुराणोंमें जहां महादेवजीके विवाहका वर्णन लिखा है वहां स्पष्ट यह लिखा हुआ है कि प्रथम गणेशकी पूजा होके पीछे वैवाहिक कार्य किये गये। अब कहिये कि जिस पुतलेको पार्वतीजीने अपने शरीरके मैलसे बनाया था वह महादेवजीके बिवाहमें सबसे पहिले पूजा गया और समस्त ब्रह्मादि देवता उस ही की पूजा करते हैं।

अब कार्तिकेयकी उत्पत्ति सुनिये। एक वार तारकासुरने देवतोंको अत्यन्त दुःख दिया इस कारण देवतोंने ब्रह्मासे प्रार्थना की कि हे ब्रह्मन्! इस दत्यके मारनेका शीघ्र उपाय कीजिये, ब्रह्माने विष्णुकी स्तुतिकी उसको सुनके आकाशबाणी हुई, जिसका अभिप्राय यह था कि यदि शिवके वीर्य्यसे पुत्रकी उत्पत्ति हो तो वही इस असुरका वध करेगा तब सब देवतोंने कामदेवसे प्रार्थना की और ब्रह्माने पार्वतीजीको महादेवजीके पास पहुंचाया कि "गणेशंकुर्वाणोंवानरंचकार" वा "ओदनंभुं-जानोविपंभंक्ते" इन कहावतोंके अनुसार देवतोंकी कार्यसिद्धि तो न हुई वरन कामदेवको ही शिवने भस्म कर दिया फिर अनायासही एक वार महादेवका वीर्यपात हुआ और वह अग्निमें गिरा उससे ही जंगलमें कार्तिकेयका जन्म हुआ, उस अत्यन्त

रूपवाले कुमारको देखके एक राजाकी कन्या (जो जंगलमें अपनी ५ सखियोंके सहित घूमने आई थी) ने इच्छा की कि यह बालक मेरा पुत्र हो और उसकी प्रत्येक सखीने यही चाहा कि यह बालक मेरा पुत्र हो, कार्त्तिकेयने उनकी इच्छाको पूर्ण करनेके निमित्त अपने ६ मुख बनाके कहा कि मैं तुम ६ हों का पुत्र हूं तुम सब मुझे स्तनपान कराओ। तबसे ही कार्त्तिकेयका नाम षडानन हुआ।

कहिये तो क्या ही लालबुझक्कड़ीपन है कि प्रथम कामको भस्म करना और अग्निमें वीर्यको गिराना उस पर भी तुर्रा यह कि वीर्य भस्म न हुआ उलटा पुत्र उत्पन्न होगया। क्या किसी प्रत्यक्षादि प्रमाणसे और वेदसे लालबुझक्कड़ोंके उपदेशक इस कथाको सच्ची सिद्ध कर सकते हैं ?

इनसे बढ़कर एक कथा शिवपुराणमें लिखी है। यद्यपि वह कथा परम अश्लील है तो भी पुराणोंमें बराबर छपती है और कोई उसको नहीं रोकता है।

शिवपुराणमें लिखा है कि एक बार ब्रह्मा और विष्णुमें अपने अपने महत्व पर झगड़ा हुआ। अर्थात् ब्रह्मा कहते थे कि हम सबसे बड़े तथा पूज्य हैं और विष्णु कहते थे कि हम सबसे प्रधान और पूज्य हैं। इस झगड़ेका न्याय करानेको दोनों देवता शिव महाराजके पास गये। शिव महाराजने अपने उपस्थको इतना बढ़ाया कि वह आकाश और पोतालमें पूर्ण हो गया, इसके अनन्तर शिवने उक्त दोनों देवतोंसे कहा

कि तुममेंसे जो इसका अन्त देख आवेगा वही जगत्में सब देवतोंसे बड़ा तथा पूज्य समझा जायगा, महादेवजीकी आज्ञानुसार ब्रह्मा ऊपर और विष्णु नीचेको गये जब सैकड़ों वर्ष तक जाते जाते भी उनको उपस्थका अन्त न मिला तब विष्णुने आकर सत्य कह दिया कि मुझे इसका अन्त न मिला परन्तु ब्रह्माने आकर झूठ बोला कि मैं अन्त तक पहुंचा था देखो यह केतकी का फूल लिङ्गके ऊपर रक्खा था ब्रह्माकी इस मिथ्या बातको सुनकर महादेवजीने कहा कि बिष्णु सच्चे और ब्रह्मा झूठे हैं इस कारण जगत्में विष्णुकी पूजा होगी और ब्रह्माकी नहीं होगी। शिवपुराणकी इस ही कथा का सारांश महिम्नस्तोत्रमें पुस्पदन्ताचार्यने लिखा है अब वैष्णवोंको चुल्लु भर पानीमें डूब मरना चाहिये। क्योंकि शिवपुराणके अनुसार उनके विष्णु महादेवके उपस्थका भी अन्त नहीं जानते फिर सर्वज्ञ क्योंकर हो सकते हैं।

देवीभागवतमें विष्णुको घोड़ेका अवतार धारण करनेवाला लिखा है परन्तु प्रायः पुराणोंको माननेवाले इस हयग्रीव अवतारकी कथाको नहीं जानते हैं देवीभागवतमें लिखा है कि मधुकैटभसे लड़कर (मारकर) जब विष्णु थक गये तब लक्ष्मीके विहार और शेषकी शय्याको त्याग कर एक गिरिगुहामें जा के सो रहे तब फिर एक देवदमनकारी दैत्य उत्पन्न हुआ और उसके मारनेकी चिन्ताने देवताओंके चित्तको आ घेरा तब सब मिलके ब्रह्माके पास गये, ब्रह्माने योगदृष्टिसे देखा कि विष्णु एक कन्दरामें अपने धनुषके कोनेको ठोड़ीमें लगाये सोते हैं ब्रह्मा

की आज्ञानुसार देवताने उसही गिरिगुहामें गये, जहां विष्णु सोते थे किन्तु किसी देवतामें इतना साहस नहीं था कि विष्णु को जगाता तब चिन्ताग्रसित ब्रह्माकी भृकुटिसे धृङ्गी नामक जन्तु उत्पन्न हुआ और कहने लगा कि आप लोग यज्ञमें मेरा एक भाग नियत करदें तो मैं विष्णुकी निद्राको भङ्ग करदूं, बहुत विचारके अनन्तर सब देवताओंने भृङ्गीकी बातको स्वीकार किया तब भृङ्गीने विष्णुके धनुषके प्रत्यञ्चा (रोदे) को काट दिया. रोदेके कटते धनुष कोनेके आघातसे विष्णुका सिर उड गया तब तो सब देवताओंको व्याकुल देखक श्रीभगवतीने आकाशवाणीसे कहा हे देववृन्द ! तुम शोक मत करो यह सब जगत् मायाके आधीन है। विष्णुने मेरी शक्ति लक्ष्मीजीका इन्द्रभवनमें इस कारण उपहास किया था कि "देखो तुम्हारा भाई उच्चश्रवा घोड़ा है" बश लक्ष्मीके शापमें विष्णुका सिर उड़ गया है, तुम इनके कमन्ध पर किसी घोड़ेका सिर काट कर रख दो तब यह जीवेंगे। देवताओंने वैसा ही किया और उस घुड़मुहें विष्णुका नाम हयग्रीव रक्खा गया।

ऐसे ही भविष्य पुराणमें सूर्यके घोड़ा बन जानेकी कथा लिखी है। सूर्यकी असल स्त्री जब सूर्यके तेजको न सह सकी तब अपनी छायाको स्त्री बनाके सूर्यके घरमें रख दिया और आप घोड़ी बनके बनको चली गयी। उस छायासे सूर्यको जब दो सन्तान हो चुकीं तब पूर्व सन्तानोंमें छायाके प्रेमको कम देखके सूर्यको सन्देह हुआ और वह अपनी असल स्त्रीकी

खोजमें प्रवृत्त हुये। अनुसन्धानसे विदित हुआ कि सूर्यकी असल स्त्री घोड़ी बनके वनमें रहती है। तब सूर्य भी घोड़ा बनके वनमें पहुंचे और अपनी घोड़ीसे अश्विनी कुमार नामक दो पुत्र उत्पन्न किये। भला इन पौराणिकोंसे कोई पूंछे कि जब सूर्य घोड़ेके रूपमें थे तब जगत्में किसका प्रकाश था? क्या कोई पौराणिक जी दांतवाये सूर्यमण्डलमें खड़े थे।

जगत्में यह ईश्वरीय नियम प्रचलित है कि स्त्री पुरुष नहीं बन सकती और पुरुष स्त्री नहीं बन सकता है परन्तु पुराण वालोंने इस ईश्वरीय नियमको भी उलट दिया है। श्रीमद्भागवतके नवम स्कन्ध अध्याय १ में लिखा है कि सूर्यवंशके आदि पुरुष महाराज वैवस्वत मनु के जो इक्ष्वाकु आदि १० पुत्र प्रसिद्ध हैं। वैवस्वतमनुके यह दश पुत्र थे इक्ष्वाकु,नृग, शैय्याति, दिष्ट, धृष्ट, करूषक, नरिष्यन्त, पृषध्र, नभग और कवि) उनकी उत्पत्तिसे पूर्व वैवस्वत मनुने महर्षि वशिष्ठसे पुत्रेष्टि यज्ञ कराया परन्तु उस यज्ञके प्रतापसे मनुकी स्त्रीके गर्भसे इला नामकी कन्या उत्पन्न हुई, कन्याको देखके मनुको बड़ा असन्तोष हुआ और उन्होंने वशिष्ठसे कहाः—

भगवन्! किमिदंजातं कर्म्मबोब्रह्मवादिनाम्।
विपर्य्ययमहोकष्टम् मैवं स्यादब्रह्मविक्रिया ॥१७
यूयंमंत्रविदोयुक्तास्तपसादग्धकिल्विषाः।
कुतः सङ्कल्पवैषम्यमनृतंविबुधेष्विव ॥१८॥

तन्निशम्यवचस्तस्य भगवान्प्रपितामहः ॥
होतुर्व्यतिक्रमंज्ञात्वा बभाषेनृपनन्दनम् ॥१९॥
एतत्सङ्कल्पवैषम्यं होतुस्तेव्यभिचारतः ॥
तथापिसाधयिष्येते सुप्रजत्वंस्वतेजसा ॥२०॥

एवंव्यवसितोराजन् भगवान्समहायशाः ॥
अस्तौषीदादिपुरुषमिलायाः पुंस्त्वकाम्यया ॥२१॥
तस्मैकामवरंतुष्टो भगवान्हरिरीश्वरः ॥
ददाबिलाभवत्तेन सुद्युम्नः पुरुषर्षभः ॥२२॥

इन श्लोकोंका अभिप्राय यह है कि वैवस्वत मनुके जब इला नामकी कन्या उत्पन्न हुई तब मनुने महर्षि वशिष्ठसे कहा कि यह उलटा कार्य क्यों हुआ ? अर्थात् मैंने जो पुत्रकी प्राप्तिके वास्ते यज्ञ किया था उससे पुत्री उत्पन्न क्यों हुई ? आप सब लोग वेद (मन्त्र) वैदिक कर्म्म और ब्रह्मके जानने वाले हैं आपके यज्ञसे ऐसा उलटा फल होना उचित नहीं है क्योंकि ऐसा उलटा फल न होना चाहिये। वशिष्ठ महाराजने उत्तर दिया कि होता (आहुति देनेवाले) के उलटे संकल्पसे यह उलटा फल हुआ है परन्तु मैं अपने तेजसे तुमको सुपुत्र बनाऊंगा ऐसा कहके वशिष्ठने विष्णुकी स्तुति की उससे प्रसन्न हो के जो विष्णुने वशिष्ठ को वर दिया उस ही वरके प्रतापसे मनुकी पुत्री इला पुरुष हो गई और उसका नाम सुद्युम्न रक्खा गया।

(इन महाराज सुद्युम्नकी वही गति हुई जैसी एक चुहेकी

कथा हितोपदेशमें लिखा है) यह बनावटी कथा है किसी नगरके समीप एक ऋषि रहा करते थे उनके आश्रम पर एक चुहीका बच्चा फिरा करता था एक दिन चुहीके बच्चेको खानेके निमित्त एक बिल्ली झपटी ऋषिने दया करके चुहीके बच्चेसे कहा कि 'त्वमपिमार्जारोभव' इतना कहते ही चुहीका बच्चा बिलाड़ बन गया किसी दिन उस बिलाड़ पर कुत्ते ने हमला किया, ऋषिने उसे बिलाड़से कुत्ता बना दिया, इस ही प्रकारसे चुहीके बच्चेको बढ़ाते २ सिंहके रूपमें परिणित कर दिया। चुहीका बच्चा जब सिंह बनके निर्भय विचरने लगा तब बनके अन्य सिंह उसका यह कह कर निरादर करने लगे कि रे तू तो वही चुहीका बच्चा है ऋषिने बिलारसे बचाया था परन्तु हमलोग असली सिंह वंशके सिंह हैं तू हमारी बराबरी क्या करेगा " इस अपमानको कृत्रिम सिंह स सह सका और समझा कि जब तक यह ऋषि जीयेगा तब तक मेरा ऐसे ही अनादर होता रहेगा इससे प्रथम ऋषिको मार डालना चाहिये यह विचारकर ज्योंही वह ऋषिकी ओर चला त्यों ही ऋषिने उसके बुरे अभिप्रायको समझ के कह दिया "पुनःमूषिकोभव" बस इतना कहते ही वह चूहा होगया) एवं सुद्यम्न फिर भी स्त्री हो गया।

स एकदा महाराज विचरन् मृगया वने ।
वृत्तः क तपयामात्यै रश्वमारुह्यसैंधवम् ॥२३॥
प्रगृह्य रुचिरं चापं शरांश्चपरमाद्भुतान् ।
दक्षितोलुमगंवीरो जगाम दिशमुत्तराम् ।२४।

स कुमारो वनं मेरोरधस्तात् प्रविवेश ह ।
यत्रास्तभगवान् शर्वो रममाणः सहोमया २५
तस्मिन् प्रविष्ट एवासौ सुद्युम्नः परवीरहा ।
अपश्यत्स्त्रियमात्मानं अश्वंचवडवांनृप ॥२६॥
तथा तदनुगाः सर्वे आत्मलिङ्गविपर्य्ययम् ।
दृष्ट्वाविमनसो भुवन् वीक्ष्यमाणाःपरस्परम् २७

एक समय सुद्युम्न अपने मंत्री वर्गको साथ लेके और धनुर्वाण लेके उत्तर दिशामें शिकार खेलने को गया, राजकुमार सुद्युम्न एक मृगके पीछे जाते जाते सुमेरु पर्वतकी तरहटीके वनमें पहुंच गया, इसही वनमें महादेवजी पार्वतीके सहित विहार किया करते हैं । उस वनमें घुसते ही राजकुमार सुद्युम्न स्त्री, और उसका घोड़ा घोड़ी होगया, उसके सम्पूर्ण साथी भी स्त्री होगये और आश्चर्यसे युक्त होके एक दूसरेको देखने लगे । इस पर भी आश्चर्य यह है कि वह राजकुमार एक महीना स्त्री रहता था और एक महीना पुरुष रहके राज्यके कार्य करता था, इस राजा के स्त्रीशरीरसे सन्तान हुई और पुरुष शरीरसे भी वंश चला, इस ही कथामें लिखा है कि महादेवके शापसे वह वन ऐसा हो गया था कि जो पुरुष उस वनमें जाय वही स्त्री हो जाय, श्रीमद्भागवत नवमस्कन्धके प्रथम अध्याय ही में लिखा है।

एकदा गिरिशं द्रष्टुमृषयस्तत्र सुव्रताः ।
दिशोबितिमिराभासाः कुर्वन्तस्समुपागमन् ।२९।

तान्विलोक्यांबिकादेवीविवस्त्रान्व्रीडिताभृशम् ।
भर्त्तुरङ्कात्समुत्थाय नीवीमाश्वथपर्य्यधात् ।३०।
ऋषयोपि तयोर्वीक्ष्य प्रसंगं रममाणयोः ।
निवृत्ताः प्रययुस्तस्मात् नरनारायणाश्रमम् ॥३१॥
तदिदं भगवानाह प्रियायाः प्रियकामया ।
स्थानं यः प्रविशेदेतत् स वै योषिद्भवेदिति ॥३२

इन श्लोकोंका अभिप्राय यह है कि एक समय ऋषि लोग महादेवके दर्शनार्थ उक्त वनमें गये उस समय महादेव पार्वतीके साथ विहार कर रहे थे ऋषियोंको आतो देख कर पार्वती अत्यन्त लज्जित हुई क्योंकि वह वस्त्र हीना थी, पार्वतीने महादेवकी गोदसे उठकर वस्त्र पहिरा, ऋषि लोग भी महादेव पार्वतीके विहार समयको जानकर वहांसे लौट आये और नरनारायणके आश्रमको चले गये, तब महादेवने पार्वतीको प्रसन्न करनेके निमित्त कहा कि जो कोई इस स्थानमें आवेगा वह स्त्री हो जायगा । इस भागवतके बनाने वाले लालबुझक्कड़से कोई पूछे कि उस स्थानमें महादेवजी पुरुष क्योंकर रहे ? यदि महादेवजी ऐसा कहते कि "मांविनायोविशेदेतत्" तब कुछ ठीक भी होता, इसके अतिरिक्त जिन महादेवजीको पुराण वाले सर्वज्ञ मानते हैं उनको यह भी मालूम न हुआ कि ऋषि लोग हमारे दर्शनको आते हैं हम उनके आनेसे पूर्व ही सावधान हो जांय ।

राजा सुद्युम्नकी अस्म्भव कथाकी समाप्ति इतने ही में नहीं

हुई वरन चन्द्रमाके पुत्र बुधसे उसका गान्धर्व विवाह कराया गया और उसके उदरसे पुरुरवाकी उत्पत्ति भी हुई और एक पुत्र उत्पन्न होजानेके बाद स्त्रीरूपी सुद्युम्नने अपने हर्त्ता कर्त्ता और विधाता रूपी गुरू बशिष्ठजी को फिर याद किया, याद करते ही बशिष्ठजी आ मौजूद हुए और सुद्युम्नकी दशा देखकर अत्यन्त दुःखी हुए फिर बशिष्ठने महादेवको प्रसन्न करनेके निमित्त घोर तप किया, उनके तपसे प्रसन्न होके महादेवने दर्शन देके यह वर दिया।

मासं पुमान्स भविता मासं स्त्री तव गोत्रजः।
इत्थं व्यवस्थया कामं सुद्युम्नावतु मेदिनीम् ॥

कि सुद्युम्न एक महीना पुरुष और एक महीना स्त्री रहा करेगा और इच्छा पूर्वक पृथ्वीकी रक्षा करे।

आचार्यानुग्रहात्कामं लब्ध्वा पुस्त्वं व्यवस्थया।
पालयामास जगतीं नाभ्यनन्दत् स्मतं प्रजाः ॥

इस प्रकारसे आचार्यकी कृपासे सुद्युम्नको पुरुषत्व प्राप्त हुआ और उसने पृथ्वीका पालन किया परन्तु प्रजा उससे प्रसन्न न रही सुद्युम्नके पुरुष रूपसे तीन और स्त्री रूपसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

तस्योत्कलो गयो राजन् विमलश्च सुतास्त्रयः।
दक्षिणापथराजानो बभूवुर्धर्म्मतत्पराः ॥

उस सुद्युम्नके उत्कल, गये और विमल यह तीन पुत्र उत्पन्न

हुए यह तीनों दक्षिण देशके धर्म्मपरायण राजा हुए।

अब पाठक स्वयं विचार सकते हैं कि इस किस्सेसे अलिफ लैलाके किस्से अच्छे हैं वा नहीं, चिकित्सा शास्त्रके प्रमाणोंसे यह बात सिद्ध हो चुकी है कि स्त्रीके शरीरके धातु तथा शिरा और अस्थि आदि पुरुषके शरीरके धातु और शिरा आदिसे अत्यन्त भिन्न हैं प्रत्येक महीनेमें उनका बदल जाना सर्वदा असम्भव है अतएव यह कथा नितान्त अनभिज्ञ और गपोड़ा-नन्दियोंकी बनाई है आज कल जैसे गपोड़िया ईसाई कहा करते हैं कि "खुदाने आदमकी पसली निकाल कर स्त्रीको रचा" उससे भी अधिक गपोड़ेसे भरी यह सुद्य स्नकी कथा है।

इसके अतिरिक्त देवी भागवतमें ब्रह्मा विष्णु और शिव इन तीनों देवतोंको स्त्री बना दिया है, जब यह तीनों देवता सृष्टि रचनेमें असमर्थ हुए तो भगवतीकी आज्ञासे तीन विमान इनके पास आये और इन तीनोंको लेके आकाशको उड़ गये रास्तेमें इनने सहस्रों ब्रह्मा विष्णु और शिव देखे पश्चात मणिद्वीप (जैसे विष्णुभागवतमें गोलोक लिखा है वैसे ही देवी भागवतमें मणि-द्वीप लिखा हुआ है, गोलोकमें कृष्ण हो एक पुरुष रहते हैं और सब स्त्रियां है ऐसे ही मणिद्वीपमें भगवतीकी सम्पूर्ण दासियां रहती हैं पुरुष एक भी नहीं है) में पहुंचते ही तीनों देवता स्त्री बन गये और सैकड़ों वर्ष तक भगवतीकी सेवा करते रहे, अन-न्तर एक दिन यही तीनों देवता भगवतीके समीप सेवामें उप-स्थित थे उन्होंने देखा कि भगवतीके बायें पैरके अंगूठेमें सारा

संसार बसा हुआ है अनेक ब्रह्मा, अनेक विष्णु और अनेक महादेव अपनी सृष्टिका पालना कर रहे हैं इस अनोखी सैर बीनको देखते ही ब्रह्मादि तीनों देवतोंके छक्के छूट गये और इनको अपनी पहिली अवस्थाकी याद आई तब देवीकी स्तुति करने लगे देवीने इनकी स्तुति से प्रसन्न होके अपनी तीन दासी, अर्थात् महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली उक्त २ देवतोंको प्रदान की । इस कथाने सम्पूर्ण पुराणोंको ही रद्दी बना दिया क्योंकि इस कथाको सच्ची माननेसे समुद्र मथन और उससे लक्ष्मीका उत्पन्न होना बिल्कुल मिथ्या हो गया फिर दक्ष प्रजापतिकी कन्या सतीसे महादेवका विवाह अथवा मार्कण्डेय पुराणमें जो पार्वतीकी भृगुटीसे कालीकी उत्पत्ति लिखी है वह भी मिथ्या हो गई इसके अतिरिक्त सब पुराण वाले मानते हैं कि सरस्वती ब्रह्माकी पुत्री है और इस ही कारण ब्रह्माको पुत्री गमनका दोष लगाया जाता है परन्तु देवी भागवतने सब पुराणोंकी कथाओंको रद्दी कर दिया। जिस गङ्गा नदीको कोई मनुष्य भी किसी प्रमाणसे जल प्रवाहके अतिरिक्त अन्य वस्तु सिद्ध नहीं कर सक्ता है उसको भी पुराण वालोंने प्राकृत स्त्री बनाके पाण्डवोंके पूर्व पुरुष महाराज शन्तनुसे उसका बिवाह कराया और उसके पुत्र भी उत्पन्न करा दिये। जिस गङ्गाकी उत्पति गङ्गोत्री पहाड़से प्रत्यक्ष दीख रही है उसको ब्रह्म कमण्डली तथा शिवके सिरमें घूमने वाली लिख मारा। फिर महाराज भागीरथ जब उसको लाते थे तब राजा जन्हू

उसे पी गये फिर अपनी जंघा चीरके राजा जन्हूने उसे निकाल दिया क्या किसी चिकित्सा ग्रन्थके शारीरिक स्थानसे यह सिद्ध कर सक्ता है कि जो जल पिया जाता है वह बिना रक्त रूपमें परिणत हुए जंघाकी नसोंमें चला आता है ? कदापि नहीं।

कुन्तीके जारज पुत्र कर्णकी उत्पत्तिकी अद्भुत कहानीको सुनके किसे हंसी नहीं आती है। लिखा है कि एक बार कुन्ती के पिता राजा शूरसेनके पास महर्षि दुर्वासा आये राजाने उनकी सुश्रूषा करके कई मास तक ठहराया, कुन्तीने दुर्वासा ऋषिकी बड़ी सेवा की इस कारण दुर्वासा ऋषिने प्रसन्न होके कुन्तीको एक मन्त्र उपदेश किया और कहा कि इस मन्त्रसे तू जिस देवताको बुलावेगी वही तेरे पास आजायगा, दुर्वासाके चले जानेके बाद कुन्तीने मन्त्रकी परीक्षा लेनेके निमित्त श्रीसूर्य्य देवताका आह्वान किया, मन्त्र बलसे सूर्य्य देवता कुन्तीके घर में चले आये और कुन्तीके रूप लावण्यको देखके मोहित हो गये अनन्तर कुन्तीसे बोले कि बोलो मैं तुम्हारा कौनसा कार्य्य सिद्ध करूं ? कुन्तीने दीन और नम्र होके कहा कि मैंने केवल मन्त्रकी परीक्षा लेनेके निमित्त आपको बुलाया था अब आपको प्रणाम करती हूं आप निज स्थानको जाइये। सूर्य्यदेवने कहा कि हम देवता हैं हमारा आना व्यर्थ नहीं होसकता है इस कारण तुम हमारे साथ रमण करो. कुन्तीने लज्जित होके कहा—महाराज ! मैं कन्या हूं और आप अमोघ वीर्य हैं आप मुझपर दयाकर के मेरे अपराधको क्षमा कीजिये परन्तु सूर्य काहे को माननेवाले

थे उन्होंने कामी मनुष्यके समान कुन्तीको फुसलाके कहा कि तुम्हारा कन्यापन नष्ट न होगा और तुम्हारे गर्भको कोई न जानेगा और नव मासके अनन्तर मेरे समान तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा ऐसा कहके और अपनी इच्छाको पूर्णकरके सूर्य्यदेवता अपने स्थानको चले गये और कुन्तीके उसही दिन गर्भ रह गया ६ मास पश्चात् भारत प्रसिद्ध कर्ण वीरका जन्म हुआ इनकी उत्पत्ति कानसे हुई और लोहेके जिरह बख्तर तथा स्वर्ण कुण्डल पहिरे इनका जन्म हुआ कुन्तीने कर्णको एक पिंजड़ेमें रखके नदी में बहा दिया एक सूतकी राधा नाम्नी स्त्रीने उसे निकाली और निज पुत्रवत् पाला। यह ऐसी असम्भव कथा है कि जिसपर किसीको भी विश्वास नहीं हो सक्ता है प्रथम तो सूर्य्यका पृथ्वी पर आना असम्भव और विद्या विरुद्ध है फिर कवच और कुंडलके सहित बालकका गर्भसे उत्पन्न होना असम्भव और सबसे अत्यन्त असम्भव कानसे बालकका उत्पन्न होना है न मालूम हियेके अन्धोंको ऐसी असम्भव कहानियों पर क्योंकर विश्वास हो जाता है।

पुराणोंके प्राचीन होनेमें स्वयं पौराणिकोंको भी विश्वास नहीं हैं क्योंकि एक बङ्गाली पण्डितने अपने पुस्तकमें लिखा है कि श्रीमद्भागवत वोपदेवकी बनाई है।

श्रीमद्भागवतस्यानुक्रमणी रमणीकृता।
विदुषा वोपदेवेन भिषक्केशवसूनुना॥

हरि लीला नामक पुस्तकमें भी लिखा है।

श्रीमद्भागवतस्कन्धाध्यायार्थादि निरूप्यते ॥
विदुषा वोपदेवेन मन्त्रिहेमाद्रितुष्टये ॥

ज्ञानेश्वर मिश्रने जो गीताकी टीका बनाई है उनमें उन्होंने १२२७ शकाब्दमें हेमाद्रिका होना सिद्ध किया है, और वोपदेव हेमाद्रिके ही समयमें हुये थे इससे भागवतकी अत्यन्त नवीनता सिद्ध होती है, भागवतके जूर्णिका टीकामें इन श्लोकोंको उद्धृत किया है जिससे भागवतकी अर्वाचीनता स्वयं सिद्ध हो जाती है

पुराणोंकी सम्पूर्ण असम्भव और असत्य कहानी लिखी जाय तो एक बड़ा भाड़ी पुस्तक बन जाय इसके अतिरिक्त इनके परस्पर विरोध दिखानेको भी एक स्वतन्त्र पुस्तक रचनेकी आवश्यकता है ॥

महाराज प्रियव्रतकी कथा जो श्रीमद्भागवतके पञ्चम स्कन्ध प्रथम अध्यायमें लिखी है वह सर्वथा वेद विरुद्ध और हास्यास्पद है वेदोंमें स्पष्ट लिखा है कि सृष्टिकर्त्ता परमात्माने आदि सृष्टिमें समुद्र और सूर्य्यादिको बनाया। और सूर्य्यके उदयास्तसे रात्रि और दिनका तथा मास और वर्षका विभाग जगत् में हाता है परन्तु भागवतमें लिखा है कि—

यावदवभासयतिसुरगिरिमनुक्रमन्
भगवानादित्योवसुधातलमर्द्धं नैव
प्रतपत्यर्द्धं नावाच्छादयति तदाहि भगवदुपासनो-
चिताति पुरुषप्रभावस्तदनभिनन्दन्समजवेन रथेन

ज्योतिर्भयेन रजनीमपिदिनंकरिष्यामीति सप्तकृत्व
स्तरणिकनुपर्य्येक्रामद्द्वितीयइव पतंगः ॥

महाराज प्रियव्रतने यह विचार किया कि सूर्य्य सुमेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करता है इस कारण आधे जगत्में रात्रि रहती है बस इस रात्रिको मैं दिन करूंगा ऐसा विचार कर अपने प्रकाशमय रथपर बैठके वह सूर्य्यके समान घूमने लगा ॥

येवा उहतद्रथचरणनेमिकृतपरिखास्तास्तेससप्तसिन्धव
आसन्यत एव कृताः सप्तभुवोद्वीपाः ॥

महाराज प्रियव्रतके रथके पहियेसे जो खाई बनीं वही सात समुद्र होगये और जो भूमि उनके बीचमें रह गई वह जन्बू प्लक्ष और शाल्मली आदि सात द्वीपके नामसे प्रसिद्ध होगई। भागवतवालेने जो क्षारोद (खारी जलका) इक्षुरसोद (ऊखके रसका) मदोद (शरावका) घृतोद (घीवका) क्षीरोद (दूधका) दधिमण्डोद (दहीके पानी वा छाछका) शुद्धोद (शुद्ध जलका) यह सात समुद्र लिखे हैं परन्तु यह नहीं लिखा है कि राजा प्रियव्रतके रथ के पहियेसे जो सात खाई बनी उनमें मद्य (शराब) आदि को किसने भरा यदि ईश्वरकी कृपासे स्वयं भर गये तो जिस ईश्वर ने ऊखका असंख्य मन रस निकाला और असंख्य गेलन शराब बनाके समुद्रमें भरा तो उस परमेश्वरको खाई खोदते ही क्या आलस्य आता था जो प्रियव्रतको उनके खोदनेकी आवश्यकता हुई, वास्तवमें यह सब कथा वेद विरुद्ध और मिथ्या है।

देवी भागवतादि कई एक पुराणोंमें शुक्रकी कन्या देवयानी और बृहस्पतिके पुत्र कचकी कथा अत्यन्त हास्यास्पद लिखी है शायद अलिफ लैलामें ऐसी कोई कहानी न होगी।

लिखा है कि दैत्योंके पुरोहित शुक्राचार्य्यको संजीवनी विद्या आती थी उसके बलसे समरमें मरे दत्योंको वह जिला देते थे परन्तु देवतोंके गुरू बृहस्पति इस विद्याको न जानते थे इस कारण बृहस्पतिने अपने पुत्र कचको शुक्रके पास संजीवनी विद्या सीखनेके वास्ते भेजा शुक्र आचार्य्य थे इस कारण कचको विद्या पढ़ाना स्वीकार किया और अपने घरमें रखके कचको पढ़ाने लगे शुक्रकी कन्या देवयानी कचसे प्रीत करने लगी कि बिना कच को भोजन कराये आप कभी न खाती थी, कचको क्रमशः स-ञ्जीवनी विद्या आने लगी, जब दत्योंको यह समाचार मिला वह बहुत घबड़ाये और कचको मारनेका उपाय सोचने लगे, एक दिन कच अपने आश्रमानुसार प्रातः सन्ध्या करने नगरसे बाहर गये थे वहीं दैत्योंने कचको मार डाला और भिड़होंको खिला दिया जब भोजनके समय तक कच शुक्रके स्थानपर लौट कर न गये तो देवयानीको बड़ी चिन्ता हुई देवयानीने अपने पितासे कहा कि दैत्य गुरो! अभी तक कचने भोजन नहीं किया और उसको बिना देखे मैं भी भोजन नहीं कर सकती हूं कृपा करके शीघ्र कचको बुलाइये। शुक्रने कहा कि पुत्रि! कचको दैत्यने मारकर भिड़होंको खिला दिया अब उसका जीना कठिन है शुक्र के मुखसे इस अनिष्ट बातको सुनके देवयानीने उत्तर दिया कि

यदि आप कचको न जिलावेंगे तो मैं भी मर जाऊंगी, लाचार होके दैत्यगुरु बनमें गये और विद्याबलसे उन्हीं भिड़होंको एकत्रित किया जिन्होंने कचको खाया था फिर सञ्जीवनी विद्यासे भिड़होंके पेटसे कचके अङ्ग और प्रत्यङ्गों को निकाला और उसे जीवित करके अपने घर लाये तब देवयानीने भोजन किया, इसके अनन्तर फिर एक दिन दैत्योंने कचको मारके भस्म कर दिया और फिर देवयानीके कहनेसे शुक्रने उसे जिलाया जब दैत्योंने देखा कि देवयानी कचको नहीं मारने देती है और कच भी सञ्जीवनी विद्यामें निपुण होगया है। परन्तु यह सीख कर यदि चला जायगा तो देवता हमसे प्रवल हो जायंगे ऐसा विचार कर दैत्योंने फिर कचको मारा और उसके मांसको शराब बना के शुक्रको पिला दी, इस बार भी देवयानीने कचको बुलानेके निमित्त शुक्रसे हठ किया तब शुक्रने देवयानीसे कहा कि इस बार कच मेरे पेटमें हैं यदि कच जीवेगा तो मैं मर जाऊंगा और मैं जीवित रहूंगा तो कच नहीं जीवेगा देवयानीने कचके जिलानेके वास्ते अत्यन्त हठ किया तब शुक्रने सञ्जीवनी विद्याके मन्त्र पढ़ने आरम्भ किये उन मन्त्रोंके प्रतापसे कच शुक्रका पेट चीर के निकल आये और अपने गुरूको मरा हुआ देखके पश्चात्ताप करने लगे परन्तु कचको सञ्जीवनी विद्या आगई थी इससे कच ने शुक्रको भी जिला दिया पश्चात् शुक्रने कचसे कहा कि सम्पूर्ण दैत्य तुम्हारे शत्रु होगये हैं इस कारण घर चले जाओ, जब कच अपने घरको जाने लगा तब देवयानीने कचसे कहा कि मैं

तुम्हारे विरहमें मर जाऊंगी इस कारण तुम मुझसे विवाह करलो, कचने उत्तर दिया कि मैंने तुम्हारे पितासे विद्याध्ययन किया है इस सम्बन्धसे गुरू पुत्री हो मैं तुम्हारे साथ विवाह न करूंगा तब देवयानीने कचको शाप दिया कि तुम्हारी विद्या सफल न होगी कचने भी देवयानी को शाप दिया कि तुमको ब्राह्मण वरकी प्राप्ति न होगी इस ही शापसे देवयानीका विवाह राजा ययातिके साथ हुआ था।

क्या आश्चर्यकी बात है कि मांसकी शराब बनाई गई, और उसे शुक्र पी भी गये और फिर कच जी उठो कहिये कि कचका जीव भी शराबमें घुल गया था? ऐसे जटल काफियों पर कौन मनुष्य विश्वास कर सकता है?

भागवतके अष्टमष्कन्ध १२ अध्यायमें एक ऐसी अद्भुत कथा लिखी है जिससे रामपुरकी बाजी भी शर्माती है जिस समय देवता और दैत्योंने समुद्रको मथके मदिरा और अमृतको निकाला उस समय अमृतके वास्ते देव और दानवोंमें घोर संग्राम होने लगा, इस ही अवसरमें दानवोंको मोहित करनेके निमित्त विष्णुने मोहनी (स्त्री) रूप धारण किया और दानवों को मदिरा तथा देवतोंको अमृतपान कराया (इसके अनन्तर)

वृषध्वजो निशम्येदं योषिद्रूपेण दानवान्
मोहयित्वा सुरगणान् हरिः सोममपाययत् १
वृषमारुह्य गिरिशः सर्वभूतगणवृतः ।
सोमया च यथोद्दष्टुं यत्रास्ते मधुसूदनः २

महादेवने यह सुना कि भगवान् विष्णुने मोहनीरूप धारण करके देवताओंको अमृत पिलाया, महादेव उमाके सहित बैलपर चढ़के और अपने गणोंको साथ लेके वहां गये जहां विष्णु भगवान् थे महादेवने विष्णुकी बड़ी भारी स्तुति करके कहा।

अवतारा मया दृष्ट्वा रममाणस्य ते गुणैः
सोहन्तद्दृष्टु मिच्छामियत्ते योषिद्रूपुर्द्धृतम्

तुम्हारे अनेक अवतार मैंने देखे अब मैं उस नारीरूपको देखना चाहता हूं जिससे तुमने दत्योंको मोहित किया और देवतोंको अमृत पिलाया। महादेवकी बातको सुनकर विष्णु ने हंसकर कहा।

कौतूहलाय दैत्यानाम् योषिद्वेषो मयाकृतः
पश्यता देवकार्य्याणि गते पीयूषभाजने
तत्तेहं दर्शयिष्यामि दिदृक्षोः सुरत्तम् !

इस प्रकारसे महादेवकी स्तुतिको सुनके भगवान् विष्णु बोले कि जब अमृतका पात्र देवतोंसे दैत्योंके पास चला गया तब मैंने दैत्योंको मोहित करनेके निमित्त जो स्त्रीका रूप धारण किया था वह तुमको दिखलाऊंगा, वह मेरा रूप कामियोंको अत्यन्त प्यारा है परन्तु वह केवल सङ्कल्प मात्र ही है। ऐसा कहके भगवान् विष्णु वहीं अन्तर्द्धान हो गये जहां उमाके सहित महादेव विराजमान थे और चारों ओरको देख रहे थे।

भगवान् विष्णुके अन्तर्द्धान हो जानेके पश्चात् जो महादेव

की दशा हुई वह वर्णनातीत है (बयानसे बाहर है) न मालूम भागवतके बनाने वालेकी इस कथाके लिखनेमें कैसी निर्लज्जताने घेर लिया था, लिखा है—

ततो ददर्शोपवने वरस्त्रियं
विचित्रपुष्पारुणपल्लवद्रुमे ।
विक्रीड़तीं कन्दुकलीलया लसद्
दुकूलपर्य्यस्तनितम्बमेखलाम् ॥
तां वीक्ष्य देव इतिकन्दुक लीलयेषद्
व्रीडारफुटस्मितविसृष्टकटाक्षसुष्ट
स्त्रीप्रेक्षणप्रतिसमीक्षणविह्वलात्मा
नात्मानमन्तिक उमां स्वगणांश्च वेद ।

तस्याः कराग्रात्सतु कन्दुको यदा
गतो विदूर तमनुव्रजस्त्रियाः
वासः ससूत्रं लघुमारुतो हरत्
भवस्य देवस्य किलानुपश्यतः ।

एवं तां रुचिरापांगीं दर्शनीयां मनोरमां
दृष्ट्वा तस्यां मनश्चक्रे विषजंत्यां भवः किल ।
तयापहृतविज्ञानः तत्कृतस्मरविह्वलः
भवान्या अपि पश्यन्त्या गहह्रीस्ततत्पदं ययौ ।
सा तमायान्तमालोक्य विवस्त्रा व्रीडिताभृशम्

निलीयमाना वृत्तेषु हसन्ती नान्वतिष्ठत ।
तामन्वगच्छद्भगवान् भवः प्रमुषतेन्द्रियः
कामस्य च वशंनीतः करेणुमिव यूथपः ।
सोनुव्रज्यतु वेगेन गृहीत्वाऽनिच्छतीं स्त्रियं
केशबन्ध उपानीय बाहुभ्यां परिषस्वजे ।
सोपशूढा भगवता करिणा करिणी यथा
इतस्ततः प्रसर्पन्ती विप्रकीर्णशिरोरुहा ।
आत्मानं मोचयित्वांग सुरर्षभभुजान्तरात्
प्रादुत्सा पृथुश्रोणी मायादेवविनिर्मिता ।
तस्यानुधावतो रेतः च स्कन्दामोघरेतसः
शुष्मिणोयूथपस्येव वासित मनुधावतः ।
यत्र यत्रापतन्मह्यां रेत् रतस्य महात्मनः
तानि रूद्रस्यदम्भश्च क्षत्राण्यासन्महीपते ।

इन श्लोकोंका भावार्थ यह है कि इसके अनन्तर समीपवर्ती वागमें (जिसमें लाल लाल और कोमल पत्ते तथा पुष्प भरे हुये थे) गेंदको उछालती हुई एक अत्यन्त सुन्दरीको देखा। उस मन्द मुस्कान वाली स्त्रीको गेंद उछालते देख कर महादेव ऐसे कामसे व्याकुल हुये कि उसके पास बैठा पार्वती और अपने गणोंकी भी लज्जा जाती रही। जब उस स्त्रीके हाथसे गद बहुत दूर चली गई और वह उसको पकड़नेके निमित्त झपटी तब वायुने उसके बारीक वस्त्रको उड़ाया, महादेव उस

स्त्री पर ऐसे मोहित हुए कि पार्वतीके सामने ही उसके पीछे भागे वह वस्त्र हीना स्त्री महादेवको अपने पीछे आता देखकर बहुत लज्जित हुई और वृक्षोंमें छिप गई। महादेव भी वृक्षोंमें उसके साथ चले गये और उसका जूड़ा पकड़के अङ्क (गोद) भरके आलिङ्गन किया वह स्त्री इधर को तड़क कर महादेवकी भुजाओंसे छूटी और भागी। इस आलिङ्गनसे जहां जहां महादेवका वीर्य्य पतन हुआ वहीं वहीं सोनेकी खान हो गई।

भला कहिये इस लाल बुझक्कड़ी कथासे क्या आशय निकलता है? एक तो वह कि महादेव ऐसे अबोध हैं कि उनको इतना भी ध्यान न रहा कि मैंने अभी विष्णुसे स्त्रीका स्वांग भरनेको कहा था। दूसरा यह कि महादेव सरीखे महानुभाव देवता भी परस्त्रीगामी और निर्लज्ज हैं, भला विचारिये तो सही कि यदि सब पुराण एक व्यासके ही बनाये होते तो जिन महादेवको एक स्थानमें कामदेवका भस्म करने वाला लिख आये हैं उनको ही दूसरे स्थानमें अत्यन्त कामी और स्त्रीगामी क्यों लिखते?

पुराणोंमें जो भविष्यद्वाणीके छलसे राजोंका वर्णन लिखा है उसके देखनेसे जान पड़ता है कि यह समस्त पुराण मुसलमानोंके समयमें बनाये गये हैं क्योंकि श्रीमद्भागवतके स्कन्ध १२ अ० १ में लिखा है।

सिन्धोस्तटे चन्द्रभागाम् काचीं काश्मीरमण्डलम्
भोक्ष्यन्ति शूद्राव्रत्याद्या म्लेच्छाष्टो ब्रह्मवर्चस

अर्थात् सिन्धु नदके किनारे, चन्द्रभागा नदीके किनारे दक्षिणमें कांचीपुरीका और काश्मीर देशको शूद्र और म्लेच्छ भोगेंगे (राज्य करेंगे) इस लेखसे स्पष्ट जान पड़ता है कि जब मुसलमानोंका राज्य सिन्ध देशमें होगया था तब भागवत बनाई गई है यदि यह भविष्यत वाणी होती तो वहां भी अवश्य लिखा रहता कि सिन्धुसे ब्रह्मपुत्र पर्य्यन्त म्लेक्षोंका राज्य हो जायगा। इसके अतिरिक्त भविष्यत् वाणीमें जैसे चन्द्रगुप्त और नन्दादिके नाम लिखे हैं वैसे ही महाराज विलियम और महाराणी विक्टोरियाके भी नाम लिखे होते परन्तु भागवतादि पुराणोंमें कहीं पर यह भी नहीं लिखा कि किसी द्वीपान्तरवासिनी राज राजेश्वरी स्त्री का भारतमें राज्य होगा तब हम क्यों कर विश्वास करें कि पुराणोंमें भविष्यत बात लिखी है। श्रीमद्भागवतमें जो भविष्यत वाणी लिखी है कि—

तत्तोष्टौयवनाभाव्या चतुर्दश तु रुष्करा।
भूयोदशगुरुण्डाश्च मोना एकदशैवतु॥

अर्थात् कंक जातिके जब १६ राजा राज्य कर चुकेंगे उनके अनन्तर आठ यवन राजा होंगे फिर १४ रुष्कर जातिके राजा राज्य करेंगे इनके अनन्तर गुरुण्ड जातिके १० राजा राज्य करेंगे फिर ११ मौन वंशके राजा होंगे।

यदि इस श्लोकको भविष्यत वाणी ही समझा जाय तो कंक शब्दसे पूनेके पेशवाओंका ग्रहण हो सक्ता है क्योंकि कृत्रिम ब्राह्मणको कङ्क कहते हैं परन्तु यवनोंके ओर गुरुण्ड

अर्थात् अङ्गरेजोंके मध्यमें रुष्कर जातिके कोई राजा नहीं हुए तब इसको भविष्यत वाणी क्योंकर मानी जाय ? इसके अतिरिक्त भागवतमें यह भी लिखा है कि—

अ रभ्यभवतोजन्म यावन्नन्दाभिषेचनम् ।
एतद्वर्षसहस्रन्तु शतं पञ्चदशोत्तरम् ॥

शुकदेव परिक्षितसे कहते हैं कि आपके जन्मसे राजा नन्दके अभिषेक (तख्तनशीन) पर्यन्त १११५ वर्ष होते हैं, किन्तु मगध देशके राजा नन्दके समयको महाराज परीक्षितके समयसे अन्यून २५०० वर्ष होते हैं अब कहिये कि इतिहास ग्रन्थोंकी रीतिसे भागवतका लेख मिथ्या ठहरता है वा नहीं ?।

वास्तवमें पुराण उन मनुष्योंके द्वारा रचे गये हैं जो न इतिहास विद्याको जानते थे और शास्त्रोंसे अभिज्ञ थे केवल मुसलमानोंके जटल काफियोंको सुनके उनकी नकल किया करते थे।

यह सब पुराण मुसलमानोंके समयमें बनाये गये है जो लोग इन नवीन ग्रन्थोंको वेद मूलक वा वेदानुसार कहते हैं उनके नेत्रों पर पक्षपातका चश्मा लगा हुआ है क्योंकि स्वामी शङ्कराचार्यने भी पुराण शब्द वाच्य ब्राह्मण ग्रन्थोंको ही माना है।